दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम का विस्तृत विवरण

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत निम्नलिखित पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं:

पाठ्यक्रम*	अवधि	आयु सीमा& (वर्ष)	योग्यता #	अधिकतम स्थान	प्रवेश शुल्क (रु)	परामर्श शुल्क (रु)	प्रायोगिक कक्षा शुल्क (रु)	परीक्षा शुल्क (रु)	कुल शुल्क (रु)
व्यक्तित्व परिष्कार (01)– प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम	6 माह	50	10+2	30	2000	400	0	600	**3000**
परिवार प्रबंधन (02)– प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम	6 माह	50	10+2	30	2000	400	0	600	**3000**
भारतीय संस्कृति (03)– प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम	6 माह	50	10+2	30	2000	400	0	600	**3000**
योग प्रवेशिका (04)– प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम	6 माह	50	10+2	30	2000	550	1500	750	**4800**
स्वास्थ्य संरक्षण (05)– प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम	6 माह	50	10+2	30	2000	550	1500	750	**4800**
स्नातकोत्तर डिप्लोमा योग विज्ञान (06)	1 वर्ष	50	10+2 +3	50	4000	1000	3000	1500	**9500**
संस्कृत प्रवेशिका (07)– प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम	6 माह	50	10+2	30	2000	400	0	600	**3000**

& 10 वीं कक्षा की अंकतालिका/प्रमाणपत्र में दी गई जन्मतिथि के आधार पर आयु जाँची जाएगी

10+2=12 वीं कक्षा उत्तीर्ण; 10+2+3=स्नातक कक्षा उत्तीर्ण

*यदि किसी पाठ्यक्रम में 10 से कम आवेदन स्वीकृत होते हैं, अथवा 10 से कम पंजीयन होते हैं, तो उस पाठ्यक्रम के समस्त आवेदन/पंजीयन निरस्त कर दिए जाएंगे

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम को वर्ष 2008 में दूरस्थ शिक्षा परिषद, नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त हुई। दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम का उद्देश्य है भारतीय संस्कृति के आधारभूत सिद्धांतों को वैज्ञानिक विधि से प्रस्तुत करना, तथा शिक्षा एवं विद्या के समन्वय से विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी पाठ्यक्रम उपलब्ध कराना। इस कार्यक्रम का मूल लक्ष्य है देश–विदेश में दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति का सन्देश पहुँचाना, एवं जन–जन के जीवन को सकारात्मक दिशा प्रदान करना।

पाठ्यक्रमों का विस्तृत विवरण

1. व्यक्तित्व परिष्कार

(प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम; पाठ्यक्रम कोड 01; पात्रता 10+2; अवधि 6 माह; आयु सीमा 50 वर्ष)
(वांछित शैक्षिक प्रमाणपत्र: 10 वीं एवं 12 वीं कक्षा के अंकपत्र एवं उत्तीर्ण करने के प्रमाण)

इस पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य मनुष्य को रचनात्मक एवं विधेयात्मक जीवन की दिशा प्रदान करना है। इसमें प्रतिभागियों को यह बोध कराया जाता है कि व्यक्तित्व निर्माण में विचारों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी जैसे शाश्वत् तत्वों का जीवन में समावेश कर के व्यक्तित्व को परिष्कृत किया जा सकता है और स्थाई सफलता प्राप्त की जा सकती है। आज के भौतिकवादी जीवन में यह पाठ्यक्रम जीवन प्रबन्धन में सहायक सिद्ध होगा।

प्रश्नपत्र संख्या	विषय	प्रश्नपत्र कोड	सत्रीय कार्य अंक	सत्रांत परीक्षा अंक
प्रथम	रचनात्मक जीवन की कला	0101	20	80
द्वितीय	मानव जीवन की विकृतियाँ: निदान एवं समाधान	0102	20	80
तृतीय	आध्यात्मिक जीवन	0103	20	80
चतुर्थ	परियोजना कार्य	0104	–	100

2. परिवार प्रबंधन

(प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम; पाठ्यक्रम कोड 02; पात्रता 10+2; अवधि 6 माह; आयु सीमा 50 वर्ष)

(वांछित शैक्षिक प्रमाणपत्र: 10 वीं एवं 12 वीं कक्षा के अंकपत्र एवं उत्तीर्ण करने के प्रमाण)

समाज की मूल ईकाई परिवार है। पारिवारिक सामंजस्य, नारी जागरण तथा बच्चों का समग्र विकास समाज को दृढ़ता प्रदान करते हैं। वर्तमान समय में पारिवारिक विघटन के कारण विभिन्न प्रकार की सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। आज की आवश्यकता यह है कि परिवार संस्था को सुदृढ़ किया जाए तथा जनमानस को इस हेतु शिक्षित किया जाए। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को परिवार प्रबंधन तथा उसके माध्यम से अपने व्यक्तित्व के बहुआयामी विकास की सम्भावनाओं के प्रति जागरूक करता है।

प्रश्नपत्र संख्या	विषय	प्रश्नपत्र कोड	सत्रीय कार्य अंक	सत्रांत परीक्षा अंक
प्रथम	परिवार निर्माण	0201	20	80
द्वितीय	भारतीय नारी	0202	20	80
तृतीय	बाल निर्माण	0203	20	80
चतुर्थ	परियोजना कार्य	0204	–	100

3. भारतीय संस्कृति

(प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम; पाठ्यक्रम कोड 03; पात्रता 10+2; अवधि 6 माह; आयु सीमा 50 वर्ष)

(वांछित शैक्षिक प्रमाणपत्र: 10 वीं एवं 12 वीं कक्षा के अंकपत्र एवं उत्तीर्ण करने के प्रमाण)

'सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा' की उक्ति यह सिद्ध करती है कि भारतीय संस्कृति ही विश्व की सर्वप्रथम संस्कृति है। इस संस्कृति की विशेषता यह है कि यह आध्यात्मिक जीवन की ओर मनुष्य को प्रेरित करती है तथा शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की दिशा निर्धारित करती है। वर्तमान समय की विभिन्न समस्याओं के समाधान इस संस्कृति में निहित हैं। यह पाठ्यक्रम भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्वों की जानकारी तथा इसके विश्वव्यापी विस्तार एवं योगदान के महत्व को समझाता है।

प्रश्नपत्र संख्या	विषय	प्रश्नपत्र कोड	सत्रीय कार्य अंक	सत्रांत परीक्षा अंक
प्रथम	भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्त्व	0301	20	80
द्वितीय	भारतीय संस्कृति का विश्वव्यापी विस्तार	0302	20	80
तृतीय	तीर्थ के विविध आयाम	0303	20	80
चतुर्थ	परियोजना कार्य	0304	–	100

4. योग प्रवेशिका

(प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम; पाठ्यक्रम कोड 04; पात्रता 10+2; अवधि 6 माह; आयु सीमा 50 वर्ष)
(वांछित शैक्षिक प्रमाणपत्र: 10 वीं एवं 12 वीं कक्षा के अंकपत्र एवं उत्तीर्ण करने के प्रमाण)

योग व्यक्ति, परिवार एवं सामाजिक समुदाय के स्वस्थ, सुखी व समुन्नत जीवन का रहस्य है। वैज्ञानिक अनुसंधानों से यह प्रमाणित हो चुका है कि योग जीवन के सभी पहलुओं को स्वस्थ एवं सुविकसित कर सकता है। यह पाठ्यक्रम योग के आधारभूत तत्वों, इसके द्वारा शारीरिक स्वास्थ्य एवं मानसिक प्रसन्नता की प्राप्ति, एवं योग आधारित चिकित्सा की विस्तृत जानकारी प्रदान करेगा।

प्रश्नपत्र संख्या	विषय	प्रश्नपत्र कोड	सत्रीय कार्य अंक	सत्रांत परीक्षा अंक
प्रथम	योग परिचय	0401	20	80
द्वितीय	हठयोग	0402	20	80
तृतीय	योग एवं स्वास्थ्य	0403	20	80
चतुर्थ	परियोजना कार्य	0404	–	100
पंचम	प्रायोगिक कार्य	0405	–	100

5. स्वास्थ्य संरक्षण

(प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम; पाठ्यक्रम कोड 05; पात्रता 10+2; अवधि 6 माह; आयु सीमा 50 वर्ष)
(वांछित शैक्षिक प्रमाणपत्र: 10 वीं एवं 12 वीं कक्षा के अंकपत्र एवं उत्तीर्ण करने के प्रमाण)

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य समग्र स्वास्थ्य (शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक और सामाजिक) के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक करना है, जिससे कि वे अपनी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग करते हुए अपने श्रेष्ठ लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, योग, यज्ञोपैथी (यज्ञ द्वारा चिकित्सा), एवं अन्य पूरक एवं पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। प्रकृति प्रदत्त वनस्पतियों, जड़ी–बूटियों एवं घरेलू मसालों का औषधीय उपयोग कर के रोग निवारण कर सकते हैं।

प्रश्नपत्र संख्या	विषय	प्रश्नपत्र कोड	सत्रीय कार्य अंक	सत्रांत परीक्षा अंक
प्रथम	स्वास्थ्य प्रबंधन	0501	20	80
द्वितीय	शरीर संरचना एवं वैकल्पिक उपचार विधियाँ	0502	20	80
तृतीय	वानस्पतिक द्रव्यों का औषधीय उपयोग	0503	20	80
चतुर्थ	परियोजना कार्य	0504	–	100
पंचम	प्रायोगिक कार्य	0505	–	100

6. योग विज्ञान

(स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम; पाठ्यक्रम कोड 06; पात्रता 10+2+3; अवधि 1 वर्ष; आयु सीमा 50 वर्ष)
(वांछित शैक्षिक प्रमाणपत्र: 10 वीं, 12 वीं एवं स्नातक कक्षा के अंकपत्र एवं उत्तीर्ण करने के प्रमाण)

असंतुलित दिनचर्या एवं अकर्मण्य जीवनशैली से उपजी विभिन्न शारीरिक मानसिक व्याधियाँ मानव जीवन के अस्तित्व के लिए संकट बन गई हैं। इस स्थिति के निवरण के लिए योग एक सशक्त माध्यम है। योग प्राचीन ऋषियों के अनुभवी जीवन का सार है। यह एक गुह्य साधना पद्धति होने के साथ–साथ एक उच्च कोटि का व्यावहारिक विज्ञान भी है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से योग के मूलभूत तत्वों के साथ–साथ समकालीन योगियों के ज्ञान को जानने का अवसर मिलेगा। योग के वैज्ञानिक पक्ष की जानकारी एवं एक सफल चिकित्सा पद्धति के रूप में इसके उपयोग का ज्ञान प्राप्त होगा। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी खुद को एक कुशल योग प्रशिक्षक के रूप में तैयार कर सकता है।

प्रश्नपत्र संख्या	विषय (प्रथम सत्र)	प्रश्नपत्र कोड	सत्रीय कार्य अंक	सत्रांत परीक्षा अंक
प्रथम	योग के आधारभूत तत्त्व	0601	20	80
द्वितीय	हठयोग परिचय	0602	20	80
तृतीय	शरीर विज्ञान	0603	20	80
चतुर्थ	वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियाँ	0604	20	80
पंचम	प्रायोगिक कार्य	0605	–	100

प्रश्नपत्र संख्या	विषय (द्वितीय सत्र)	प्रश्नपत्र कोड	सत्रीय कार्य अंक	सत्रांत परीक्षा अंक
प्रथम	योग सूत्र का परिचयात्मक अध्ययन	0606	20	80
द्वितीय	योग एवं स्वप्रबंधन	0607	20	80
तृतीय	स्वस्थवृत्त एवं आहार चिकित्सा	0608	20	80
चतुर्थ	प्रायोगिक कार्य	0609	–	100
पंचम	परियोजना कार्य	0610	–	100

7. संस्कृत प्रवेशिका

(प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम; पाठ्यक्रम कोड 07; पात्रता 10+2; अवधि 6 माह; आयु सीमा 50 वर्ष)

(वांछित शैक्षिक प्रमाणपत्र: 10 वीं एवं 12 वीं कक्षा के अंकपत्र एवं उत्तीर्ण करने के प्रमाण)

इस पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों को विश्व की प्राचीनतम, अत्यन्त समृद्ध, पूर्ण वैज्ञानिक एवं भारतीय संस्कृति की आधारभूत संस्कृत भाषा का सम्यक् एवं साङ्गोपाङ्ग ज्ञान प्रदान करना है। इसी क्रम में इस पाठ्यक्रम में प्रश्नपत्रों का विभाजन व्याकरण, श्रुतिसुधा, सूक्तिसुधा एवं चरितसुधा में किया गया है। वास्तविकता यह है कि आज राष्ट्रीय एकता, आर्थिक विषमता, अनुशासन–प्रशासन, शिक्षा–दीक्षा से सम्बद्ध सभी समस्याओं का समाधान संस्कृत भाषा में निहित है। विश्व कल्याण की कामना से वैदिक संस्कृति अनुप्राणित है – "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः"।

प्रश्नपत्र संख्या	विषय	प्रश्नपत्र कोड	सत्रीय कार्य अंक	सत्रांत परीक्षा अंक
प्रथम	व्याकरणम्	0701	20	80
द्वितीय	सुधासंग्रहः	0702	20	80
तृतीय	महापुरुषाणां चरितम्	0703	20	80
चतुर्थ	परियोजना कार्य	0704	–	100

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम का विस्तृत विवरण

आत्म–परिष्कार के द्वारा सामाजिक उत्थान करना सभी पाठ्यक्रमों का मूल उद्देश्य है। दे०सं०वि०वि० दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से जनमानस को परिष्कृत एवं उत्कृष्ट बनाने हेतु दृढ़ संकल्पित एवं समर्पित है।

आवेदकों को सूचित किया जाता है कि दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत दिसम्बर 2016 तक जारी की गई समस्त कार्यक्रम निर्देशिकाओं (Program Guides) एवं विवरणिकाओं (Prospectus) में वर्णित नियम, निर्देश, प्रपत्र, आदि, वर्तमान आवेदकों एवं दिसम्बर 2016 के उपरांत पंजीकृत होने वाले विद्यार्थियों पर लागू नहीं होंगे।

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम से संबंधित विभिन्न नियमों का निर्धारण करने एवं आवश्यकतानुसार इनमें परिवर्तन करने का अधिकार विश्वविद्यालय प्रशासन के पास सुरक्षित है। यदि कोई आवेदक अथवा विद्यार्थी इन नियमों का उल्लंघन करता है, अथवा इनमें परिवर्तन करने हेतु जोर देता है, तो इसे अनुशासनहीनता माना जाएगा, एवं ऐसी स्थिति में आवेदक अथवा विद्यार्थी पर अनुशासनात्मक कार्यवाही करने का अधिकार विश्वविद्यालय प्रशासन के पास सुरक्षित रहेगा।

पाठ्यक्रमों हेतु अन्य जानकारी एवं प्रवेश संबंधी समस्त जानकारी दूरस्थ शिक्षा केंद्र की वेबसाइट (http://distance.dsvv.ac.in/) पर उपलब्ध है। आवश्यकतानुसार समय–समय पर इस जानकारी एवं दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम से संबंधित विभिन्न नियमों में परिवर्तन करने का अधिकार विश्वविद्यालय प्रशासन के पास सुरक्षित है। यदि विश्वविद्यालय प्रशासन दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम से संबंधित विभिन्न नियमों में परिवर्तन करेगा तो इसकी सूचना दूरस्थ शिक्षा केंद्र द्वारा वेबसाइट पर उपलब्ध करा दी जाएगी। यह आवेदकों एवं पंजीकृत विद्यार्थियों की जिम्मेदारी है कि वे नियमित रूप से वेबसाइट से इन जानकारियों को प्राप्त करते रहें एवं इनका पालन करें।